वर्ष : 10 अंक : 1 जनवरी–मार्च 2015

पन्त प्रसार सन्देश

(प्रसार शिक्षा निदेशालय की त्रैमासिक समाचार पत्रिका)
गोविन्द बल्लभ पन्त कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, पन्तनगर–263 145, ऊधमसिंह नगर, उत्तराखण्ड

संरक्षकः डा. मंगला राय, कुलपति
मुख्य सम्पादकः डा. वाई. पी. एस. डबास, निदेशक प्रसार शिक्षा
सम्पादकः डा. जितेन्द्र सिंह, पोस्ट डाक्टरल फेलो एवं ई. अनिल कुमार, सह निदेशक (कृषि अभियन्त्रण)

कुलपति संदेश

मैं अपने देश के प्रथम एवं अग्रणी तथा हरित क्रान्ति की जन्मस्थली पन्तनगर कृषि विश्वविद्यालय में शामिल होने पर खुशी व्यक्त करता हूँ। कृषि को नई उँचाईयों को प्राप्त करने एवं बनाये रखने के लिए तालमेल होना चाहिए। देश में शान्ति एवं समृद्धि लाने के लिए कृषि उत्पादकता में दक्षता, लाभप्रदता एवं स्थिरता के उपायों को अपनाये जाने की अनिवार्य रूप से आवश्यकता है। भोजन, पोषण एवं पर्यावरण सुरक्षा तथा नौकरी के अवसर के लिए कृषि को अधिकाधिक वेग और गति देनी है। अनुसंधान और प्रसार के लिए प्रौद्योगिकी आधारित विकास का होना आवश्यक है।

भारत एक साधन सम्पन्न देश है। हमारी सभ्यताएं हमेशा इन संसाधनों के बीच जीवन्त फलती–फूलती रहती हैं। हम उस देश के नागरिक हैं, जिसमें आत्मसम्मान और अदम्य् इच्छा शक्ति है। पन्तनगर ने हमेशा अपना ध्वज ऊँचा रखा है। हम नये तरीकों और दोहन सह–क्रियाओं का पता लगायेगें। हम इस पर कार्य करने के लिए नए क्षितिज की खोज करेंगें। हमारा विश्वविद्यालय उत्तराखण्ड के साथ–साथ सम्पूर्ण देश में कृषि विकास की रणनीति एवं प्रक्रियाओं के लिए केन्द्रीय भूमिका में होगा। लोग बहुत सारी उम्मीदों के साथ हमें देख रहे हैं। उनकी उम्मीदों एवं सपनों को साकार करना अब हमारी जिम्मेदारी है।

मुझे यह जानकर खुशी हो रही है कि प्रसार शिक्षा निदेशालय द्वारा त्रैमासिक समाचार पत्रिका 'पन्त प्रसार सन्देश' का वर्ष 2005 से नियमित प्रकाशन किया जा रहा है। यह पत्रिका पन्तनगर विश्वविद्यालय के प्रसार शिक्षा की गतिविधियों को आप तक निरन्तर पहुंचा रही है। मुझे आशा है कि यह पत्रिका प्रसार कार्यो को और अधिक गतिशील बनाने में सहभागी होगी।

शुभकामनाएँ।

(मंगला राय)
कुलपति

डा. मंगला राय- विश्वविद्यालय के नये कुलपति

प्रख्यात कृषि वैज्ञानिक डा. मंगला राय ने 21 मार्च, 2015 को गो.ब. पन्त कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, पन्तनगर के कुलपति के रूप में पदभार संभाल लिया। डा. राय का जन्म 30 जून, 1947 को उत्तर प्रदेश के गाजीपुर जनपद में हुआ। डा. राय बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय (BHU), वाराणसी से वर्ष 1969 में आनुवंशिकी एवं पादप प्रजनन में मास्टर डिग्री एवं वर्ष 1973 में पी.एच.डी. की डिग्री प्राप्त की। उन्होंने वर्ष 1973 में पादप प्रजनक के रूप में सेवा शुरू की। वह अनुसंधान, अध्यापन एवं प्रबन्धन में विभिन्न महत्वपूर्ण पदों जैसे राष्ट्रीय समन्वयक, अखिल भारतीय समन्वित शोध परियोजना (अलसी), भा.कृ.अ.प.; निदेशक, तिलहन प्रौद्योगिकी, भा.कृ.अ.प.; सहायक महानिदेशक (बीज), भा.कृ.अ.प.; सहायक महानिदेशक (नीति एवं परिप्रेक्ष्य नियोजन), भा.कृ.अ.प.; निदेशक, राष्ट्रीय कृषि प्रौद्योगिकी परियोजना, भा.कृ.अ.प.; उपमहानिदेशक (फसल विज्ञान), भा.कृ.अ.प.; कृषि आयुक्त, भारत सरकार; अध्यक्ष, राष्ट्रीय कृषि विज्ञान अकादमी (NAAS); सचिव (कृषि अनुसंधान एवं शिक्षा विभाग), भारत सरकार एवं महानिदेशक, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (ICAR), नई दिल्ली का निर्वहन कर चुके हैं।

डा. राय को ख्याति प्राप्त 16 विभिन्न विश्वविद्यालयों द्वारा डाक्टर ऑफ साइंस (D.Sc) की मानद उपाधि से सम्मानित किया जा चुका है। डा. राय अन्तर्राष्ट्रीय मक्का एवं गेहूँ सुधार केन्द्र (CIMMYT), मैक्सिको के न्यासी बोर्ड के सदस्य; भारतीय तिलहन अनुसंधान सोसाइटी के अध्यक्ष; एशियाई मक्का जैव प्रौद्योगिकी नेटवर्क के अध्यक्ष; अन्तर्राष्ट्रीय सूरजमुखी अनुसंधान नेटवर्क के अध्यक्ष; खाद्य एवं कृषि संगठन (संयुक्त राष्ट्र संघ), रोम–इटली के सलाहकार; कृषि सूचना केन्द्र–दक्षिण एशियाई क्षेत्रीय सहयोग संगठन (SAARC) के अध्यक्ष; अन्तर्राष्ट्रीय चावल अनुसंधान संस्थान (IRRI), मनीला–फिलीपींस के न्यासी बोर्ड के सदस्य; अन्तर्राष्ट्रीय शुष्क एवं उष्ण कटिबन्धीय फसल अनुसंधान केन्द्र (ICRISAT), हैदराबाद के गवर्निंग बोर्ड के सदस्य; नीति सलाहकारी परिषद–अन्तर्राष्ट्रीय कृषि अनुसंधान आस्ट्रेलियन केन्द्र के सदस्य जैसे प्रख्यात पदों पर दायित्व दे चुके हैं। डा. राय पन्तनगर आने के पूर्व बिहार सरकार में कैबिनेट मंत्री दर्जा प्राप्त मुख्यमंत्री के विशेष कृषि सलाहकार के रूप में योगदान दे रहे थे।

97वाँ अखिल भारतीय किसान मेला एवं कृषि उद्योग प्रदर्शनी का सफल आयोजन

प्रसार शिक्षा निदेशालय के तत्वाधान में 'कृषि कुंभ' के नाम से विख्यात 97वाँ अखिल भारतीय किसान मेला एवं कृषि उद्योग प्रदर्शनी का भव्य आयोजन मार्च 13–16, 2015 को विश्वविद्यालय परिसर में किया गया। मेले का उद्घाटन मुख्य अतिथि डा. एच.एस. धामी, तत्कालीन कुलपति, पन्तनगर विश्वविद्यालय द्वारा विश्वविद्यालय प्रबन्ध परिषद के माननीय सदस्य डा. राजेन्द्रपाल सिंह एवं श्रीमती प्रेमलता सिंह तथा अन्य गणमान्य जनप्रतिनिधियों, अधिष्ठातागण, निदेशकगण,

वैज्ञानिकों, कर्मचारियों, छात्रों एवं कृषकों की उपस्थिति में गाँधी मैदान में किया गया। मेले का उद्घाटन करने के बाद अतिथियों एवं अन्य गणमान्य व्यक्तियों द्वारा मेला प्रांगण में लगे स्टॉलों का भ्रमण एवं अवलोकन किया गया। ततपश्चात् गाँधी सभागार में आयोजित उद्घाटन समारोह के मुख्य अतिथि, डा. एच.एस. धामी ने अपने सम्बोधन में कहा कि पन्तनगर विश्वविद्यालय का कृषि विकास में महत्वपूर्ण भूमिका अनवरत् जारी है। उन्होंने कहा कि बदलते समय के साथ हमें कृषि तकनीकी तथा अन्य सेवाओं को नये एवं उन्नत तरीके से किसानों तक पहुंचाना होगा तथा पर्वतीय कृषि में औद्यानिकी के विकास पर विशेष बल देना होगा। विश्वविद्यालय प्रबन्ध परिषद के सदस्य श्री राजेन्द्रपाल सिंह ने कहा कि पन्तनगर किसान मेला देशभर के किसानों में लोकप्रिय है। उन्होंने राज्य के भौगोलिक परिस्थितियों के अनुरूप शोध किये जाने की आवश्यकता बताई एवं नई विकसित तकनीकों का लाभ किसानों तक पहुंचाने को कहा। विश्वविद्यालय प्रबन्ध परिषद सदस्य श्रीमती प्रेमलता सिंह ने कहा कि देश में पन्तनगर विश्वविद्यालय की अलग पहचान है। इसलिए पन्तनगर को चुनौतियों को स्वीकार करते हुए राज्य के कृषि विकास के साथ–साथ देश के कृषि विकास में सक्रिय भूमिका निभानी होगी। समारोह के पूर्व में निदेशक प्रसार शिक्षा, डा. वाई.पी.एस. डबास ने आगन्तुकों का स्वागत करते हुए विभिन्न स्टॉलों के माध्यम से उपलब्ध होने वाली सुविधाओं की संक्षिप्त जानकारी दी एवं कृषि विकास के लिए किये जा रहे प्रसार कार्यों के बारे में संक्षिप्त प्रगति आख्या प्रस्तुत की। समारोह के अन्त में निदेशक, अनुसंधान केन्द्र, डा. जे.पी. सिंह ने सभी सम्मानित अतिथियों का धन्यवाद किया।

किसान मेले का उद्घाटन करते हुए तत्कालीन कुलपति डा. एच.एस. धामी

मेले में विश्वविद्यालय के विभिन्न महाविद्यालयों के साथ–साथ राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर के फर्मों ने स्टॉल लगाकर कृषि से सम्बन्धित उत्पादों एवं तकनीकों का प्रदर्शन किया। मेले में अनुसंधान केन्द्रों पर परीक्षणों/प्रदर्शनों का अवलोकन, रबी की फसलों के नवीनतम प्रजातियों के बीज व मिनीकिट की बिक्री, शाक–भाजी एवं फलों के उन्नत बीजों व पौधों की बिक्री, किसानोपयोगी उन्नत तकनीकों की प्रदर्शनी, आधुनिक कृषि यंत्रों की प्रदर्शनी, विश्वविद्यालय प्रकाशनों की रियायती दर पर बिक्री का आयोजन किया गया। वैज्ञानिकों द्वारा प्रत्येक दिवस अपरान्ह् विशेष व्याख्यानमाला तथा कृषकों की समस्याओं का निराकरण हेतु कृषक गोष्ठी का आयोजन किया गया। कृषकों के मनोरंजन हेतु प्रत्येक दिवस सायंकाल सांस्कृतिक कार्यक्रम का भी आयोजन किया गया।

मेला स्थल का भ्रमण करते हुए मुख्य अतिथि

अखिल भारतीय किसान मेला एवं कृषि उद्योग प्रदर्शनी का समापन मुख्य अतिथि एवं भूतपूर्व कुलपति, डा. बी.एस. बिष्ट, निदेशक बिड़ला इंस्टीट्यूट ऑफ एप्लाइड साइंसेज, भीमताल (नैनीताल) द्वारा किया गया। इस अवसर पर उन्होंने कहा कि पर्वतीय क्षेत्र में कृषि के क्षेत्र में आज भी काफी समस्याएं हैं। पर्वतीय क्षेत्र की भौगोलिक स्थिति भिन्न होने के कारण कृषक लाभान्वित नहीं हो पा रहे हैं। उन्होंने विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों से आह्वान किया कि वे इन दूरस्थ पर्वतीय क्षेत्रों की ओर अपना फोकस करें तथा साथ ही वहाँ की भौगोलिक परिस्थिति को ध्यान में रखते हुए औद्यानिकी, जैविक कृषि इत्यादि के बारे में शोध एवं प्रसार कार्य करें। समापन समारोह के अवसर पर विश्वविद्यालय प्रबन्धन परिषद के सदस्यगण डा. राजेन्द्रपाल सिंह एवं श्रीमती प्रेमलता सिंह ने भी विचार व्यक्त किये।

समापन समारोह को सम्बोधित करते हुए मुख्य अतिथि

समापन समारोह में निदेशक प्रसार शिक्षा, डा. वाई.पी.एस. डबास द्वारा मेले का संक्षिप्त प्रतिवेदन प्रस्तुत करते हुए बताया गया कि किसान मेले में 155 बड़ी एवं 421 छोटी फर्मों सहित कुल 576 फर्मों द्वारा स्टॉल लगाकर विविध उत्पादों एवं तकनीकों का प्रदर्शन किया गया। किसान मेले में 3,900 पंजीकृत कृषकों सहित लगभग एक लाख से अधिक आगन्तुकों ने प्रतिभाग किया। मेले में विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों डा. आई.जे. सिंह एवं डा. आर.एस. चौहान द्वारा सम्पादित पुस्तक 'कॉलेज ऑफ फिशरीजः प्रोफाइल एण्ड प्रोग्राम', डा. राम जी मौर्य द्वारा सम्पादित 'खरीफ फसलों की उन्नत कृषि तकनीकी' का विमोचन किया गया।

साहित्य का विमोचन करते हुए मुख्य अतिथि

मेले में प्रगतिशील कृषक सम्मानित

अखिल भारतीय किसान मेला एवं कृषि उद्योग प्रदर्शनी के उद्घाटन अवसर पर विश्वविद्यालय के कृषि विज्ञान केन्द्रों द्वारा चयनित प्रगतिशील कृषकों को कृषि के क्षेत्र में अभिनव परिवर्तन लाने एवं उल्लेखनीय सफलता प्राप्त करने के लिए अतिथियों द्वारा प्रतीक चिन्ह एवं प्रमाण–पत्र देकर सम्मानित किया गया। सम्मानित किये गये कृषक श्री जाहिद हसन, ग्राम–नेहन्दपुर (हरिद्वार); श्री राजेन्द्र सिंह खानका, ग्राम–टोलीपाता (पिथौरागढ़); श्री रघुनाथ प्रसाद मिश्रा, ग्राम–अफ्यू (चमोली); श्री विजयपाल सिंह सैनी, ग्राम–चिल्किया (नैनीताल); श्री गौरव कुमार, ग्राम–धर्मावाला (देहरादून); श्री अमर सिंह ठठोला, ग्राम–नाटाडोल (अल्मोड़ा); श्री उर्वादत्त चौबे, ग्राम–पऊ सात खाल (चम्पावत); श्री राम औतार कुशवाहा, ग्राम–चन्देली (ऊधमसिंहनगर) एवं श्री बचन सिंह पंवार, ग्राम–बंसूड़ी (रूद्रप्रयाग) हैं।

मेले में प्रतिभाग किये फर्मों के प्रतिनिधि सम्मानित

कृषि उद्योग प्रदर्शनी के पुरस्कार वितरण समारोह में अतिथियों द्वारा सर्वोत्तम स्टॉल का पुरस्कार मै. जय गुरूदेव इण्डस्ट्रीज–रूद्रपुर (उत्तराखण्ड) को प्रदान किया गया। इसके अतिरिक्त ऑटोमोबाइल्स एवं ट्रैक्टर समूह में मै. स्टैण्डर्ड कॉर्पोरेशन इण्डिया लि.–बरनाला (पंजाब); पावर ट्रिलर, फार्म मशीनरी एवं टूल समूह में मै. दर्शन एग्रीटेक–बाजपुर, मै. हाईटेक एग्रो इण्डस्ट्रीज–पानीपत

(हरियाणा), मै. कॉम्पीटेन्ट एग्रीकल्चर मशीनरी–बड़ौत; इरिगेशन, पम्प, मोटर्स एवं कन्ट्रोल समूह में मै. जार्ज नैट इण्डस्ट्रीज–गुड़गांव (हरियाणा); फर्टिलाइजर्स समूह में मै. दयाल फर्टिलाइजर्स–मेरठ, मै. टाटा कैमिकल्स लि.–बरेली; पेस्टिसाइडस् एवं बॉयो–पेस्टिसाइडस् समूह में मै. क्रिस्टल क्रॉप प्रोटेक्शन प्रा. लि.–दिल्ली, मै. रैलीस इण्डिया लि. –लखनऊ; एग्रो फोरेस्ट्री, नर्सरी, हर्बल एवं मेडिसिनल प्लान्टस् समूह में मै. सैंचुरी पल्प एण्ड पेपर–लालकुआँ, मै. ग्रीन प्लाई इण्डस्ट्रीज–रूद्रपुर; वेटेरिनरी, मेडिसिनल एवं एनिमल फीड समूह में मै. प्रोविमी एनिमल न्यूट्रिशन इण्डिया प्रा. लि.–बेंगलुरू, मै. मैनकाइण्ड फार्मा लि.–दिल्ली; बैंकिंग, हाऊसिंग एवं इन्श्योरेंस समूह में एस.बी. आई.–पन्तनगर एवं सीड समूह में मै. नुजीविदू सीड्स लि.–हैदराबाद (आन्ध्र प्रदेश), मै. सोत्तन सीड्स प्रा. लि.–नई दिल्ली के स्टॉल को प्रथम पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

पुरस्कार प्रदान करते हुए अतिथिगण

कृषि विज्ञान केन्द्रों की गतिविधियाँ

कृषि विज्ञान केन्द्र, टकरानी (देहरादून)

जनजातीय विकास परियोजना (टी.एस.पी.) के अन्तर्गत चकराता विकास खण्ड के दो गांव तथा विकास खण्ड–कालसी के दो गांव में लहसुन की एग्री फाउण्ड पार्वती प्रजाति के 40 प्रदर्शनों का आयोजन किया जा रहा है।

जनजातीय विकास परियोजना (टी.एस.पी.) के अन्तर्गत चकराता विकास खण्ड के दो गांव तथा कालसी विकासखण्ड के दो गांव के 60 किसानों को टमाटर की हाईब्रिड अर्का रक्षक के प्रदर्शन लगाये गये हैं। चकराता एवं कालसी विकासखण्डों में अधिकांश किसान टमाटर की दो फसल लेते हैं। इन विकास खण्डों में टमाटर के अन्तर्गत अधिकतम क्षेत्रफल हिमसोना हाईब्रिड से आच्छादित है लेकिन पिछले 3–4 वर्षों से हिमसोना हाईब्रिड में बैक्टीरियल विल्ट बीमारी का प्रकोप बहुत अधिक पाया गया है। जबकि टमाटर की अर्का रक्षक जो भारतीय बागवानी अनुसंधान संस्थान, बंगलौर से विकसित की गयी है, बैक्टीरियल विल्ट के विरूद्ध प्रतिरोधी है। केन्द्र द्वारा अर्का रक्षक हाईब्रिड के पौध अक्टूबर, 2014 में कुछ किसानों को उपलब्ध कराया गया था। जिसमें बैक्टीरियल विल्ट का प्रकोप नही पाया गया। उत्पादन के दृष्टिकोण से भी यह हाईब्रिड किस्म उत्तम है।

टमाटर की फसल का परीक्षण करते हुए वैज्ञानिक

भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, नई दिल्ली द्वारा अनुमोदित गेहूँ की प्रजाति एच.डी. 2967 के 06 प्रदर्शनों का आयोजन 2 है. क्षेत्रफल में किया जा रहा है। इस प्रजाति की बढ़वार एवं बालियों की लम्बाई बेहतर है। दून घाटी के सिंचित क्षेत्रों में अधिकांश किसान मक्का एवं तोरिया अथवा मक्का एवं सब्जी मटर के बाद गेहूँ की देर से बुवाई 15 दिसम्बर के बाद करते हैं, जिससे किसानों को अपेक्षित उत्पादन प्राप्त नही होता है। केन्द्र द्वारा गेहूँ की देरी से बुवाई की जाने वाली प्रजातियों के परीक्षण में यू.पी. 2565 का प्रदर्शन उत्कृष्ठ पाया गया है। अतः इस प्रजाति के छः प्रदर्शनों का आयोजन 2 है. क्षेत्रफल में सफलतापूर्वक किया जा रहा है। केन्द्र पर गेहूँ की 10 प्रजातियों का परीक्षण किया जा रहा है। केन्द्र पर ही गेहूँ बीजोत्पादन के अन्तर्गत वी.एल. 907 का 3 है. क्षेत्रफल में बीजोत्पादन किया जा रहा है।

केन्द्र द्वारा विगत त्रैमास में कुल 24 प्रशिक्षणों का आयोजन किया गया, जिससे 545 कृषक लाभान्वित हुये। इन प्रशिक्षणों का आयोजन सब्जी उत्पादन, पॉलीटनल तकनीक से स्वस्थ सब्जी पौध उत्पादन, फसल उत्पादन, फल उत्पादन, पोषण प्रबन्धन, पशुपालन, कुक्कुट पालन, चारा उत्पादन, एकीकृत नाशीजीव प्रबन्धन, गृह विज्ञान इत्यादि विषयों पर किया गया। ग्राम छरबा, विकासखण्ड सहसपुर में मार्च 04, 2015 को एक पशु स्वास्थ्य शिविर का आयोजन किया गया, जिसमें 24 पशुपालकों द्वारा प्रतिभाग किया गया, जिनके 102 पशुओं का परीक्षण किया गया।

केन्द्र द्वारा विगत त्रैमास में जनपद–देहरादून में 21 कृषक गोष्ठियों में केन्द्र के वैज्ञानिकों द्वारा प्रतिभाग करते हुये कुल 1235 किसानों को कृषि से सम्बन्धित विभिन्न विषयों पर तकनीकी जानकारी दी गयी। गोष्ठी का आयोजन आतमा, इफको, हार्टीकल्चर मिशन, गन्ना विभाग, जलागम निदेशालय, बैंकर्स आदि द्वारा किया गया था।

केन्द्र पर कद्दूवर्गीय सब्जियों जैसे लम्बी लौकी, गोल लौकी, चिकनी तोरी, धारीदार तोरी, करेला, खीरा की अधिक उत्पादन देने वाली हाईब्रिड के 20300 पौध पालिथीन बैग में तैयार किये गये। इन पौधों की बिक्री से केन्द्र को रू. 2.03 लाख का राजस्व प्राप्त हुआ, जिसे केन्द्र के चक्रीय निधि में जमा करा दिया गया है। इन पौधों की बिक्री से सब्जी में लगभग 3 है. क्षेत्रफल का विस्तार हुआ।

जलागम परियोजनाओं के अन्तर्गत सब्जियों की स्वस्थ पौध उत्पादन हेतु पॉलीटनल की स्थापना केन्द्र के तकनीकी मार्गदर्शन में कृषक प्रक्षेत्रों पर रायपुर विकासखण्ड के थानों, कुठार, कोटला, तंगोलीगढ़ ग्रामों में किया गया। पॉलीटनल की स्थापना विश्व बैंक की परियोजना के अन्तर्गत जलागम के सहयोग से किया गया। स्थापित पॉलीटनल में किसानों द्वारा कद्दूवर्गीय सब्जियों की पौध पॉलिथीन बैग में तैयार की गयी।

केन्द्र में पौधा किस्म और कृषक अधिकार संरक्षण प्राधिकरण, कृषि एवं सहकारिता विभाग, कृषि मंत्रालय, भारत सरकार के वित्तीय सहयोग से मार्च 30, 2015 को एक दिवसीय प्रशिक्षण का आयोजन किया गया। इस प्रशिक्षण में विकासखण्ड चकराता, कालसी एवं रायपुर के 115 कृषकों ने प्रतिभाग किया। प्रशिक्षण में पी.पी.वी. एवं एफ.आर. अधिनियम–2001, पौधा किस्म पंजीकरण तथा पादप आनुवांशिक संसाधनों के संरक्षण व परिरक्षण इत्यादि विषयों पर किसानों को तकनीकी जानकारी दी गयी।

कृषि विज्ञान केन्द्र, धनौरी (हरिद्वार)

विगत त्रैमास में केन्द्र द्वारा कुल 33 प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन किया गया, जिसमें जनपद के 516 कृषकों को कृषि एवं सम्बन्धित विषयों पर तकनीकी रूप से सुदृढ़ किया गया।

केन्द्र द्वारा अग्रिम पंक्ति प्रदर्शनों में 210 तथा प्रक्षेत्र परीक्षणों में 25 प्रक्षेत्रों पर कृषि, पशुपालन, सब्जी तथा गृह विज्ञान विषयक परीक्षणों का आयोजन किया गया।

दैनिक जागरण एवं केन्द्र द्वारा संयुक्त रूप से फरवरी 12–14, 2015 तक विकास खण्ड–भगवानपुर में किसान महोत्सव–2015 का आयोजन किया गया।

स्वच्छ भारत अभियान के अन्तर्गत केन्द्र के गोद लिये नये गाँव दौलतपुर में 2 जागरूकता दिवस का आयोजन किया गया। इसमें ग्रामीणों, महिलाओं एवं बच्चों ने उत्साहपूर्वक प्रतिभाग किया।

स्वच्छ भारत अभियान अन्तर्गत जागरूकता दिवस का आयोजन

विगत त्रैमास में पन्तनगर किसान क्लब की बैठक केन्द्र के तत्वाधान में फरवरी 18, 2015 को ग्राम–बहादरपुरजट में आयोजित की गई। इसमें कृषकों ने खेती से जुड़े व्यवसायों के लाभ पर चर्चा की।

केन्द्र परिसर में आई.डब्ल्यू.एम.पी. द्वारा प्रायोजित 'एकीकृत पोषक तत्व तथा कीट रोग प्रबन्धन' विषय पर एक दिवसीय प्रशिक्षण का आयोजन जनवरी 22, 2015 को किया गया। इसमें अनेकों ग्रामों के कृषकों द्वारा प्रतिभाग किया।

केन्द्र द्वारा ग्राम–रहमतपुर में एक प्रक्षेत्र दिवस का आयोजन कर उन्नत सब्जी उत्पादन तकनीकी का प्रचार–प्रसार किया गया। इसमें 21 कृषकों ने प्रतिभाग किया।

कृषि विज्ञान केन्द्र, लोहाघाट (चम्पावत)

महिलाओं को स्वावलम्बी बनाने हेतु केन्द्र पर 'साफ्ट ट्वाय बनाने की तकनीक' विषय पर गृह विज्ञान इकाई द्वारा फरवरी 22–25, 2015 तक चार दिवसीय रोजगार परक प्रशिक्षण का आयोजन किया गया। प्रशिक्षण के दौरान महिलाओं को विभिन्न प्रकार के खिलौने बनाने की बारीकियों से अवगत कराया गया। प्रशिक्षण में कुल 20 महिलाओं ने भाग लिया।

केन्द्र द्वारा प्रसार कार्यकर्ताओं हेतु मार्च 25–26, 2015 को केन्द्र के फसल सुरक्षा वैज्ञानिक डा. एम.पी. सिंह ने समन्वित नाशीजीव प्रबन्धन विषय पर दो दिवसीय प्रशिक्षण का आयोजन किया। जिसमें सब्जी नर्सरी प्रबन्धन एवं खरीफ मौसम की फसलों एवं सब्जियों में लगने वाले क्षतिकर कीट एवं रोगों के प्रबन्धन पर प्रशिक्षण दिया गया। प्रशिक्षण में कृषि विभाग एवं एकीकृत आजीविका सहयोग परियोजना, चम्पावत के कुल 13 अधिकारियों ने प्रतिभाग किया।

प्रशिक्षण के दौरान प्रक्षेत्र भ्रमण करते हुए प्रतिभागी

केन्द्र पर मार्च 30, 2015 को पौध किस्म एवं कृषक अधिकार संरक्षण अधिनियम–2001 विषय पर प्रशिक्षण एवं जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया, जिसमें जनपद चम्पावत व पिथौरागढ़ के कुल 100 कृषकों ने प्रतिभाग किया।

कृषि विज्ञान केन्द्र, काशीपुर (ऊधमसिंहनगर)

केन्द्र द्वारा विगत त्रैमास में कृषक एवं कृषक महिलाओं/युवतियों के श्रम को कम करना, फसलों का सुरक्षित भण्डारण, मत्स्य हेतु कार्बनिक एवं अकार्बनिक खाद का उपयोग, मत्स्य बीज प्रबंधन विषयों पर प्रशिक्षण आयोजित किये गये, जिससे लगभग 115 प्रशिक्षणार्थी लाभान्वित हुए।

रिवाल्विंग स्टूल पर प्रक्षेत्र दिवस का आयोजन

केन्द्र के वैज्ञानिकों द्वारा फसलों एवं दलहनी फसलों गेहूँ, मटर, मसूर पर 5 अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन केन्द्र पर एवं केन्द्र से बाहर लगाये गये जिसमें 34 कृषक एवं कृषक महिलायें लाभान्वित हुई। उपरोक्त प्रदर्शन 8.5 है. में लगायें गये।

केन्द्र के वैज्ञानिकों द्वारा स्वच्छता अभियान के अर्न्तगत छतरपुर गाँव की महिलाओं को स्वच्छता एवं स्वास्थ्य के बारे में जागरुक किया गया। स्वच्छ जल, भोजन एवं घर के आसपास की सफाई के बारे में विस्तृत जानकारी दी गयी।

केन्द्र के वैज्ञानिक श्री डी.एस. सिंह एवं डा. एस.के. शर्मा द्वारा जनपद के 20 कृषकों को करनाल हरियाणा स्थित केन्द्रीय मृदा लवणता अनुसंधान संस्थान, गेहूँ अनुसंधान निदेशालय, तथा राष्ट्रीय डेयरी अनुसंधान संस्थान का भ्रमण कराया गया, जिसमें कृषकों द्वारा गन्ना, गेहूँ, पशुपालन एवं लवणीय तथा क्षारीय मृदा में फसलोत्पादन सम्बन्धी तकनीकी का अध्ययन किया गया।

केन्द्र के गृहविज्ञान के वैज्ञानिकों द्वारा मार्च 26, 2015 को विकासखण्ड रुद्रपुर के ग्राम भूरारानी में रिवाल्विंग स्टूल पर प्रक्षेत्र दिवस का आयोजन किया गया, जिसमें महिलाओं को रिवाल्विंग स्टूल पर बैठकर दूध निकालने का प्रदर्शन किया गया। महिलाओं ने बताया कि इस स्टूल से हमारे कमर व पैरों पर भार नहीं पड़ता है, जिससे हम आसानी के पशुओं का दूध निकाल सकते हैं। इस प्रदर्शन में 16 महिलाओं ने भाग लिया तथा स्टूल का उपयोग करने की इच्छा जाहिर की। इसी प्रकार दूसरा प्रक्षेत्र दिवस दानपुर में मार्च 30, 2015 को किया गया। वहाँ पर 14 महिलाओं ने प्रतिभाग किया तथा स्टूल को बहुत लाभकारी बताया।

केन्द्र द्वारा बैकयार्ड पोल्ट्री पर प्रक्षेत्र दिवस का आयोजन ब्रहमनगर काशीपुर में फरवरी 25, 2015 को आयोजित किया गया, जिसमें 15 कृषकों ने प्रतिभाग किया गया।

केन्द्र के प्रभारी अधिकारी डा. सी. तिवारी, वैज्ञानिक डा. प्रतिभा सिंह एवं श्रीमती धनसारा शर्मा द्वारा ''दैनिक जागरण'' रुद्रपुर द्वारा लगाये किसान मेले में कृषि की नवीनतम तकनीकी की जानकारी दी गई। उपरोक्त किसान मेले में लगभग 1000 कृषकों ने प्रतिभाग किया।

डा. अनुपमा पाण्डे ने कृषि महाविद्यालय में आयोजित कार्यशाला में फरवरी 6–26, 2015 तक प्रतिभाग किया।

डा. सी. तिवारी ने उदयपुर में 'पशु ऊर्जा का कृषि में उपयोग' विषय पर आयोजित कार्यशाला में फरवरी 18–20, 2015 तक प्रतिभाग किया।

डा. सी. तिवारी द्वारा भोपाल में आयोजित 'कृषि में राष्ट्रीय ई–गवर्नेन्स योजना' पर आयोजित कार्यशाला में प्रतिभाग किया गया।

डा. सी. तिवारी एवं डा. बी.एस. कार्की द्वारा जनवरी 09, 2015 जनवरी माह में हुई असमय वर्षा से फसलो को हुई क्षति का सर्वेक्षण किया गया।

कृषि विज्ञान केन्द्र, ज्योलीकोट (नैनीताल)

विगत त्रैमास में केन्द्र के वैज्ञानिकों द्वारा विभिन्न विषयों जैसे– लाही, आम, आडू एवं शिमला मिर्च में समन्वित रोग प्रबन्धन, रोगों का जैविक नियत्रण, मोमबत्ती निर्माण, जंगली फलों का मूल्य संवर्धन, गुलाब एवं बुरांश का स्क्वैश, अनाज तथा घरेलू उत्पादों का सुरक्षित भण्डारण, शीत ऋतु में पशु प्रबन्धन, बकरी पालन, फसलों में सूक्ष्म पोषक तत्वों का प्रबन्धन विषय पर केन्द्र पर व केन्द्र के बाहर कुल 14 प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। इन प्रशिक्षणों का आयोजन केन्द्र के साथ–साथ जनपद के तल्ला गेठिया, दोगड़ा, कौसानी, पोखराड, स्यालीखेत, भलुटी आदि ग्रामों में किया गया।

लघु उद्योग स्थापित करने हेतु स्थानीय फल एवं सब्जियों का मूल्य संवर्धन विषय से सम्बन्धित 5 दिवसीय प्रशिक्षण आयोजित किया गया। इन विषयों के अर्न्तगत आयोजित प्रशिक्षणों के माध्यम से लगभग 255 प्रशिक्षणार्थी लाभान्वित हुए।

केन्द्र के वैज्ञानिकों द्वारा विगत त्रैमास में तिलहन, दलहन, सब्जी गेहूँ, पशुपालन, गृहविज्ञान, पादप सुरक्षा तथा उद्यान विज्ञान के कुल 90 प्रदर्शन कार्यक्रमों का कुशल संचालन किया गया। प्रदर्शनों का आयोजन लगभग 8.5 है. क्षेत्रफल में सकुना, दोगड़ा, चोपड़ा, गेठिया, स्यालीखेत, भलुटी, भटलानी, टिकुरी, धनपुर, सरना आदि स्थानों पर सफलतापूर्वक किया गया।

विगत त्रैमास में कृषि विभाग नैनीताल, उधान विभाग, इफको एवं सब्जी विज्ञान विभाग, पन्तनगर द्वारा 7 कृषक गोष्ठियों का आयोजन क्रमशः धारी, पिनरौ, हरीनगर, ज्योलीकोट, भीमताल, करनपुर तथा पिनरौ में किया गया। इन गोष्ठियों मे केन्द्र के वैज्ञानिकों ने प्रतिभाग करके 500 कृषकों को विभिन्न कृषि सम्बन्धित जैसे जैविक खेती, मृदा जीर्णोद्धार, फसलों में कीट एवं रोग प्रबन्धन एवं बीजग्राम योजना से सम्बन्धित जानकारी दी।

विगत त्रैमास में आडू में समन्वित कीट/रोग प्रबन्धन, सब्जियों की नर्सरी में रोग प्रबन्धन, महिला सशक्तिकरण विषयों पर ई–टीवी (E.TV) एवं दूरदर्शन पर कार्यक्रम प्रसारित किये गये। साथ ही सब्जियों की नर्सरी उत्पादन से अधिक लाभ कमायें, सब्जियों के विभिन्न उत्पाद तैयार करना एवं पशुपोषण विषयों पर जनवाणी पन्तनगर द्वारा वार्ता प्रसारित की गयी।

केन्द्र में कृषि मंत्रालय भारत सरकार के सहयोग से पौधा किस्म एवं कृषक अधिकार संरक्षण विषय पर जागरूकता प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया, जिसमें लगभग 150 कृषक लाभान्वित हुए।

कृषि विज्ञान केन्द्र, गैंना एंचोली (पिथौरागढ़)

विगत त्रैमास में केन्द्र पर 07 तथा केन्द्र से बाहर 20 प्रशिक्षण सम्पन्न किए गए, जिसमें क्रमशः 143 (पुरूष 93 एवं 50 महिला) एवं 417 (पुरूष 226 एवं 191 महिला) कृषक लाभान्वित हुए। केन्द्र के वैज्ञानिकों द्वारा ग्रामीण युवाओं हेतु 05 प्रशिक्षण आयोजित किये गये, जिसके द्वारा 51 (पुरूष 44 एवं 07 महिला) प्रशिक्षणार्थी लाभान्वित हुए। केन्द्र के वैज्ञानिकों द्वारा वाह्य प्रसार कार्यकर्ताओं हेतु 02 प्रशिक्षण आयोजित किये गये, जिसके द्वारा 39 (पुरूष 30 एवं 09 महिला) प्रशिक्षणार्थी लाभान्वित हुए।

केन्द्र के वैज्ञानिकों द्वारा 26 गोष्ठियों में प्रतिभाग किया गया हुई, जिससे 933 कृषक लाभान्वित हुए।

केन्द्र के वैज्ञानिकों द्वारा विगत् त्रैमास में कृषकों के प्रक्षेत्र पर 98 भ्रमण किए गये जिसके द्वारा 630 कृषक लाभान्वित हुए। केन्द्र पर जानकारियां प्राप्त करने हेतु 526 किसानों द्वारा 54 भ्रमण किये गये और केन्द्र के वैज्ञानिकों द्वारा समस्याओं का समाधान एवं कृषि उत्पादन की नवीनतम जानकारी प्राप्त की। केन्द्र के वैज्ञानिकों द्वारा 01 टीवी कार्यक्रम दिए गए और प्रचार–प्रसार हेतु दैनिक समाचार पत्र अमर उजाला व दैनिक जागरण में 02 तकनीकी समाचारों को प्रकाशित किया गया।

केन्द्र के वैज्ञानिकों द्वारा अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन में गेहूँ–5.0 है., मसूर–3.5 है., सरसों–0.5 है., सब्जी मटर–0.5 है., जई–0.5 है., बरसीम–0.5 है. क्षेत्रफल पर लगाया गया।

केन्द्र द्वारा मार्च 25, 2015 को केन्द्र पर किसान मेले/कृषक गोष्ठी का आयोजन किया गया, जिसमें 140 कृषक लाभान्वित हुए।

कृषि विज्ञान केन्द्रों की वैज्ञानिक सलाहकार समिति की बैठक

विगत त्रैमास में 05 कृषि विज्ञान केन्द्रों, लोहाघाट (चम्पावत), गैंना–एंचोली (पिथौरागढ़), मटेला (अल्मोड़ा), ग्वालदम (चमोली) एवं जाखधार (रूद्रप्रयाग) के वैज्ञानिक सलाहकार समिति (SAC) की बैठकें क्रमशः 18.02.2015, 19.02.2015, 25.03.2015, 26.03.2015 तथा 27.03.2015 में आयोजित की गयी। लोहाघाट एवं गैंना–एंचोली की बैठकों में पन्तनगर विश्वविद्यालय से डा. टी.पी. सिंह, संयुक्त निदेशक प्रसार तथा डा. बी.एस. कार्की, विषय वस्तु विशेषज्ञ (सस्य) एवं मटेला, ग्वालदम एवं जाखधार की बैठकों में डा. वाई.पी.एस. डबास, निदेशक प्रसार शिक्षा; ई. अनिल कुमार, विषय वस्तु विशेषज्ञ (कृषि अभि.) तथा डा. बी.एस. कार्की, विषय वस्तु विशेषज्ञ (सस्य) द्वारा प्रतिभाग किया गया। बैठकों में विगत वर्ष की प्रगति आख्या की समीक्षा के साथ–साथ वर्ष 2015–16 में आयोजित किये जाने वाले विभिन्न प्रसार कार्यक्रमों को अन्तिम रूप दिया गया।

वैज्ञानिक सलाहकार समिति की बैठक का आयोजन

समेटी-उत्तराखण्ड द्वारा आयोजित प्रशिक्षण

राज्य कृषि प्रबन्धन एवं प्रसार प्रशिक्षण संस्थान, उत्तराखण्ड (समेटी–उत्तराखण्ड) द्वारा विगत त्रैमास में राज्य के प्रगतिशील कृषक, कृषक सलाहकार समिति (एफ.ए.सी.) के सदस्यों, विकास खण्ड स्तरीय तकनीकी दल (बी.टी.टी.) के सदस्यों, उद्यान निरीक्षकों, मत्स्य निरीक्षकों, रेशम पालकों, फार्म स्कूल के संचालकों, एच.टी.एम. के प्रसार कर्मियों, कृषि एवं रेखीय विभागों के वरिष्ठ अधिकारियों तथा के.वी.के. के वैज्ञानिकों एवं ब्लाक तकनीकी प्रबन्धकों (बी.टी.एम.) हेतु व्यावसायिक मशरूम उत्पादन, जल संग्रह तकनीक एवं जल प्रबन्धन, रेशम पालनः आय एवं स्वरोजगार का साधन, फल उत्पादन तकनीक, प्रसार सुधार कार्यक्रम में सूचना एवं संचार तकनीकी का उपयोग, मसालों की उन्नत खेती तथा कृषि विकास में सार्वजनिक एवं निजी संस्थाओं की भूमिका विषयों पर 07 प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। इन प्रशिक्षण कार्यक्रमों के द्वारा कुल 142 प्रशिक्षणार्थी लाभान्वित हुए।

मैनेज हैदराबाद द्वारा 'एडवांस्ड ट्रेनिंग प्रोग्राम ऑन एग्रीकल्चरल नॉलेज मैनेजमेन्ट' विषयक प्रशिक्षण का आयोजन

राष्ट्रीय कृषि विस्तार प्रबन्ध संस्थान (मैनेज), हैदराबाद एवं समेटी–उत्तराखण्ड के संयुक्त तत्वाधान में चार दिवसीय ''एडवांस्ड ट्रेनिंग प्रोग्राम ऑन एग्रीकल्चरल नॉलेज मैनेजमेन्ट'' विषयक राज्य स्तरीय प्रशिक्षण का आयोजन फरवरी 25–28, 2015 तक किया गया। निदेशक आई.टी. मैनेज हैदराबाद, डा. वी. पी. शर्मा ने सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी पर अपने अनुभवों से प्रतिभागियों को लाभान्वित किया। निदेशक प्रसार शिक्षा, डा. वाई.पी.एस. डबास ने उत्तराखण्ड में प्रसार शिक्षा की भूमिका एवं महत्व के बारे में बताया। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम के अन्तर्गत कृषि में सूचना एवं संचार तकनीकी का उपयोग, आतमा माड्यूल, के.सी.सी. एवं मोबाइल सेवायें, एग्रोमेट सेवायें, प्रसार सुधार में मीडिया की भूमिका, ई–व्यापार, कृषि में रिमोट सेंन्सिग एवं जी.आई.एस. का उपयोग, एग्रीजनेट एवं एग्रमार्कनेट आदि शीर्षकों पर व्याख्यान एवं प्रयोगात्मक विधि द्वारा प्रशिक्षण दिया गया। इस प्रशिक्षण में कृषि एवं सम्बन्धित विभागों के जनपद स्तरीय वरिष्ठ अधिकारियों तथा कृषि विज्ञान केन्द्रों एवं विश्वविद्यालय के प्रसार वैज्ञानिकों द्वारा प्रतिभाग किया गया, जिससे कुल 33 प्रशिक्षणार्थी लाभान्वित हुए। प्रशिक्षण कार्यक्रम के अन्त में कोर्स समन्वयक एवं निदेशक मैनेज हैदराबाद, डा. वी.पी. शर्मा तथा निदेशक प्रसार शिक्षा, डा. वाई.पी.एस. डबास द्वारा प्रशिक्षणार्थियों को प्रमाण–पत्र एवं समूह फोटोग्राफ वितरित किये गये। इस प्रशिक्षण के आयोजन में कनिष्ठ वैज्ञानिक, डा. बी.वी. सिंह एवं पोस्ट डाक्टरल फेलो, डा. जितेन्द्र सिंह की सक्रिय भूमिका थी।

महत्वपूर्ण सब्जी फसलों के बीज उत्पादन, संसाधन एवं विपणन विषय पर राष्ट्रीय प्रशिक्षण संम्पन्न

विस्तार निदेशालय, कृषि एवं सहकारिता विभाग, कृषि मंत्रालय भारत सरकार द्वारा वित्तपोषित ''महत्वपूर्ण सब्जी फसलों के बीज उत्पादन, संसाधन एवं विपणन'' विषयक आठ दिवसीय मॉडल ट्रेनिंग कोर्स का आयोजन में मार्च 17–24, 2015 तक किया गया। प्रशिक्षण के समापन अवसर निदेशक प्रसार शिक्षा एवं कोर्स निदेशक, डा. वाई.पी.एस. डबास ने अपने सम्बोधन में कहा कि सीमित भूमि में ही सब्जियों की उत्पादकता बढ़ाये जाने हेतु उन्नतशील किस्मों के बीज उत्पादन बढ़ाये जाने तथा कृषकों को सही समय पर आपूर्ति सुनिश्चित किये जाने की आवश्यकता है। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम के अन्तर्गत सब्जी के बीज उत्पादन में भारत की स्थिति; बीज नीति, पादप सुरक्षा किस्म एवं कृषक अधिकार संरक्षण; बैगन, मिर्च, खीरा, टमाटर, शिमला मिर्च, सब्जी मटर, जड़ वाली सब्जियों, सेमवर्गीय सब्जी फसलों, भिन्डी, पत्तीदार सब्जियों, मसाले की फसलों, कन्दीय फसलों, अदरक, हल्दी, प्याज एवं लहसुन के बीज उत्पादन; सब्जी बीज उत्पादन में समेकित कीट, रोग एवं पोषक तत्व प्रबन्धन; बीज संसाधन, ग्रेडिंग पैकिंग एवं विपणन इत्यादि पर विश्वविद्यालय के वैज्ञानिको द्वारा व्याख्यान दिये गये साथ ही प्रशिक्षणार्थियों को विश्वविद्यालय के विभिन्न अनुसंधान ईकाईयों पर भ्रमण करा–कर प्रयोगात्मक जानकारी प्रदान की गयी। उक्त प्रशिक्षण में छः राज्यों से उद्यान विभाग के कुल 13 मध्यम एवं वरिष्ठ स्तरीय अधिकारियों द्वारा प्रतिभाग किया गया। इस अवसर पर प्रशिक्षण के आयोजक सदस्य संयुक्त निदेशक (एटिक) एवं प्रभारी प्रशिक्षण इकाई डा. एस.के. बंसल, विषय वस्तु विशेषज्ञ श्री मोहन सिंह एवं पोस्ट डाक्टरल फेलो डा. जितेन्द्र सिंह उपस्थित रहे।

प्रशिक्षण एवं भ्रमण इकाई द्वारा आयोजित प्रशिक्षण/भ्रमण

प्रसार शिक्षा निदेशालय के प्रशिक्षण एवं भ्रमण इकाई द्वारा विगत त्रैमास में विभिन्न सरकारी विभागों, स्वयं–सेवी संस्थाओं, निजी एवं सार्वजनिक फर्मों तथा परियोजनाओं द्वारा प्रायोजित कुल 24 प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। आयोजित किये गये यह प्रशिक्षण कृषि वानिकी, कृषि यंत्रीकरण, कृषि विविधीकरण, समन्वित खेती, पशुपालन, औद्यानिकी एवं संरक्षित खेती, पॉली हरितगृह के अन्तर्गत विभिन्न औद्यानिकी फसलों की खेती एवं कटाई उपरान्त तकनीकी एवं प्रबन्धन आदि से सम्बन्धित थे। इन प्रशिक्षण कार्यक्रमों से 593 प्रशिक्षणार्थी लाभान्वित हुए। अधिकांश प्रशिक्षण तीन दिवसीय से लेकर छः दिवसीय थे। प्रशिक्षणों के अन्त में प्रतिभागियों को प्रशिक्षण प्रमाण–पत्र वितरित किये गये। उपरोक्त प्रशिक्षणों के दौरान भ्रमण कार्यक्रम में किसानों को विश्वविद्यालय स्थित सभी अनुसंधान केन्द्रों पर भ्रमण कराकर नवीनतम जानकारी प्रदान की गयी। प्रशिक्षण एवं भ्रमण कार्यक्रम का आयोजन प्रभारी, प्रशिक्षण इकाई एवं संयुक्त निदेशक (एटिक), डा. एस.के. बंसल द्वारा किया गया।

आगामी त्रैमास में कृषकों हेतु महत्वपूर्ण बिन्दु

कृषि हेतु

सूरजमुखी के खेत में फूल निकलते समय पर्याप्त नमी होना आवश्यक है। अतः 10–15 दिन के अन्तराल में सिंचाई करते रहें।

पर्वतीय क्षेत्रों में चेतकी धान की बुवाई मार्च से लेकर अप्रैल प्रथम सप्ताह तक कर लें। इसके लिए वी.एल. धान–207, वी.एल. धान–208 एवं वी.एल. धान–209 नामक प्रजातियों का प्रयोग करें तथा जेठी धान की बुवाई मई अन्तिम सप्ताह से जून प्रथम सप्ताह तक धान की वी.एल. धान–54, वी.एल. धान–221 तथा सिंचित क्षेत्रों में गोविन्द, पन्त धान–6, पन्त धान–11 इत्यादि प्रजातियों की बुवाई करें।

अप्रैल माह में आम के बाग की सिंचाई करें। श्यामवर्ण रोग की रोकथाम के लिए ब्लाइटाक्स–50 (0.25 प्रतिशत) का छिड़काव करें। आन्तरिक ऊतकक्षय रोग की रोकथाम के लिए बोरेक्स (0.8 प्रतिशत) का छिड़काव करें। भुनगा कीट के लिए सेविन (0.2 प्रतिशत) और छोटी पत्ती रोग की रोकथाम के लिए जिंक सल्फेट (0.5 प्रतिशत) का छिड़काव करें।

अप्रैल माह में अमरूद के पेड़ों की कटाई–छंटाई का कार्य करें।

लीची, लुकाट, आंवला एवं कटहल में 15 दिन के अन्तराल पर अप्रैल माह में दो बार सिंचाई करें।

मई माह में उर्द व मूंग में आवश्यकतानुसार सिंचाई करें।

सिंचित क्षेत्रों में देर एवं मध्यम अवधि में पकने वाली धान की प्रजातियों का बीज पौधशाला में मई माह के अन्तिम सप्ताह से 15 जून तक डाल दें।

गर्मियों में गन्ने की फसल में 7–10 दिन के अन्तराल पर सिंचाई करते रहें।

पर्वतीय क्षेत्रों में मई मध्य से जून अन्त तक मंडुवा की बुवाई करें। मंडुवा की वी.एल. मंडुवा–324, वी.एल. मंडुवा–149 एवं वी.एल. मंडुवा–315 उन्नतशील प्रजातियों की बुवाई करें।

मध्यम–ऊंचे एवं अत्यधिक–ऊंचे पर्वतीय क्षेत्रों में अप्रैल अन्त से मई प्रारम्भ तक तथा निचले पर्वतीय क्षेत्रों में मई अन्त से मध्य जून तक मक्के की वी.एल. मक्का–42, वी.एल. मक्का–88 एवं वी.एल. मक्का–41 एवं नवजोत इत्यादि प्रजातियों की बुवाई करें।

जून माह में कम अवधि में तैयार होने वाली अरहर की किस्मों उपास–120, प्रभात इत्यादि प्रजातियों की बुवाई करें।

पशुपालन हेतु

पशुओं में मुँहपका–खुरपका रोग के बचाव हेतु टीकाकरण करवाएं।

पशुओं को गर्मी से बचाव हेतु दिन में दो बार स्नान की व्यवस्था करें।

मुर्गियों में रानीखेत एवं चेचक का टीका लगवाएं। गर्मी से बचाव के लिए छज्जे पर घास या छप्पर डालकर गीला करते रहें।

जून माह में पशुओं पर वाह्य कृमि नाशक दवा का उपयोग करें।

एकल खिड़की पद्धति से कृषक सेवा

प्रसार शिक्षा निदेशालय के अन्तर्गत कार्यरत कृषि प्रौद्योगिकी सूचना केन्द्र (एटिक) द्वारा विगत त्रैमास में पन्तनगर कृषक हेल्पलाईन (05944–234810) एवं किसान कॉल सेन्टर (1800–180–1551 टोल फ्री) के माध्यम से कुल 565 प्रश्न किसानों द्वारा पूछे गये, जिनका समाधान सम्बन्धित विषय के वैज्ञानिकों द्वारा किया गया। देश एवं प्रदेश के विभिन्न स्थानों से आये 935 कृषकों ने एटिक पर भ्रमण किया एवं साहित्य सम्बन्धी जानकारी प्राप्त की। इसके अतिरिक्त किसानों द्वारा एटिक से कुल रू. 1,88,140 के साहित्य एवं रू. 35,030 के धान्य फसलों एवं सब्जियों के बीजों का क्रय किया गया।

निदेशक प्रसार शिक्षा का विभिन्न वाह्य आयोजनों/बैठकों में प्रतिभाग

निदेशक प्रसार शिक्षा, डा. वाई.पी.एस. डबास एवं निदेशक अनुसंधान केन्द्र, डा. जे.पी. सिंह द्वारा फरवरी 18, 2015 को नई दिल्ली में आयोजित भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली की वार्षिक सामान्य सभा की बैठक में प्रतिभाग किया गया।

दैनिक जागरण द्वारा तीन दिवसीय किसान महोत्सव फरवरी 22–24, 2015 को गाँधी मैदान, रूद्रपुर में आयोजित किया गया, जिसका उद्घाटन मा. मुख्यमंत्री उत्तराखण्ड, श्री हरीश रावत द्वारा किया गया, जिसमें विश्वविद्यालय का स्टॉल लगाया गया तथा निदेशक प्रसार शिक्षा, डा. वाई. पी.एस. डबास द्वारा किसान महोत्सव के शुभारम्भ अवसर पर फरवरी 22, 2015 को प्रतिभाग किया गया।

निदेशक प्रसार शिक्षा, डा. वाई.पी.एस. डबास द्वारा कृषि विज्ञान केन्द्रों के सुदृढ़ीकरण, वैज्ञानिकों के वेतन, एरियर एवं कार्यक्रम सहायकों के संवर्गीय व्यवस्था के सम्बन्ध में भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली में फरवरी 26–27, 2015 को भ्रमण कर उपमहानिदेशक (कृषि प्रसार), डा. ए.के. सिंह एवं अन्य अधिकारियों से वार्ता की गई।

गो.ब. पन्त कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, पन्तनगर को वित्तीय रूप से सुदृढ़ एवं वित्तपोषित बनाये जाने हेतु मुख्य सचिव उत्तराखण्ड शासन की अध्यक्षता में मार्च 02, 2015 को देहरादून में आयोजित बैठक में निदेशक प्रसार शिक्षा, डा. वाई.पी.एस. डबास एवं निदेशक अनुसंधान केन्द्र, डा. जे.पी. सिंह द्वारा प्रतिभाग किया गया।

निदेशक की कलम से

उत्तराखण्ड राज्य की लगभग दो तिहाई आबादी कृषि पर आधारित है। कृषि व्यवसाय से होने वाले लाभ उच्च तकनीकी ज्ञान, मौसम आदि पर निर्भर है। ऐसे में यह जरूरी है कि सीमित भू–भाग से बेहतर उत्पादन के लिए कृषि को एक लाभकारी व्यवसाय के रूप में स्थापित किया जाएं। जनसंख्या वृद्धि के कारण बढ़ती बेरोजगारी की समस्या के समाधान हेतु कृषि सम्बन्धित क्षेत्रों में रोजगार में विविधता लाना जरूरी है, जिससे वह आत्मनिर्भर बनकर स्वतन्त्र रूप से देश के आर्थिक विकास में अपना योगदान दे सके। राज्य की कृषि क्रियाओं में महिलाओं का अभूतपूर्व योगदान है। अतः देश के सामाजिक–आर्थिक विकास हेतु कृषि क्षेत्र में प्रत्यक्ष रूप से महिलाओं की भागीदारी सुनिश्चित करने हेतु उनमें उद्यमिता कौशल का विकास करना आवश्यक हैं। महिलाओं द्वारा गृहकार्यों के साथ पूर्ण रूप से कृषि क्षेत्र में अपना योगदान देना वैज्ञानिक दृष्टि से उनके स्वास्थ्य के लिए अनुकूल नहीं है। ऐसे में वह पुरूषों के साथ सहयोग कर कृषि कार्यों में उचित श्रम निर्धारण कर सुचारू रूप से अपना योगदान दे सकती हैं। इस दिशा में 'मोटे अनाजों के मूल्यवर्धन द्वारा कुटीर उद्योगो की स्थापना' एक महत्वपूर्ण विकल्प है।

भारत में उपयोग होने वाले मोटे अनाज जैसे कि मंडुवा (रागी), मादिरा (सावा या झंगोरा), कोंणी (कंगनी), चीना (गनारा), कुटकी, कुट्टू (उगल), चौलाई (रामदाना) आदि हैं। मोटे अनाजों को आपातकालीन एवं कम अवधि वाली फसलों के रूप में उगाया जाता है। इन्हें बिना अधिक देखरेख के सूखी, कम उपजाऊ तथा ढालू भूमि वाले स्थान में भी आसानी से उगाया जा सकता है, इनमें लागत कम आती है। मोटे अनाज पौष्टिकता की दृष्टि से उत्तम होते हैं, जो कि कार्बोहाइड्रेट, प्रोटीन, विटामिन एवं खनिज लवण के अच्छे स्रोत होते हैं। मंडुवा में कैल्शियम की मात्रा गेहूँ की तुलना में आठ गुना तथा चावल की तुलना में तीस गुना होती है।

मोटे अनाजों के गुणवत्तायुक्त उत्पादन के पश्चात् उनका प्रक्रमण, मूल्यवर्धक उत्पादों का उत्पादन, उत्पादों की पैकेजिंग, सजावटीकरण आदि ऐसी कई प्रक्रियाएं होती हैं, जिसमें पूर्ण रूप से महिलाओं की भागीदारी द्वारा व्यावसायिक रूप से एक अच्छा लघु उद्यम स्थापित किया जा सकता है। कृषक महिलाएं समूह बनाकर इसे व्यावसाय के रूप में स्थापित करके आय प्राप्त कर सकती हैं। इन अनाजों को खाद्य पदार्थ बनाने वाली औद्योगिक इकाईयों हेतु कच्चे माल की तरह बड़ी मात्रा में आपूर्ति किया जा सकता है।

मोटे अनाजों के बने पौष्टिक मूल्यवर्धक उत्पादों जैसे मंडुवा, ज्वार, बाजरा के बिस्कुट, केक, ब्रेड, नमकीन, बन, हलवा, नूडल्स, मधुमेह रोगियों हेतु व्यंजन, रामदाना एवं कुट्टू के व्रत हेतु मूल्यवर्धित उत्पाद आदि को किसान मेले, प्रगति मैदान में आयोजित ट्रेड फेयर, सरस बाजार, उत्तराखण्ड के विभिन्न पर्वो पर आयोजित होने वाले मेलों, दिल्ली हाट आदि कई ऐसे स्थान हैं, जहाँ विक्रय हेतु रखकर उचित लाभ अर्जित किया जा सकता है। इन उत्पादों की पौष्टिकता व सम्बन्धित जानकारी को उपभोक्ताओं हेतु विभिन्न पोर्टल एवं वेबसाइट पर उपलब्ध कराया जा सकता है। उत्तराखण्ड के पर्वतीय क्षेत्र जहाँ बड़े कल–कारखाने स्थापित नहीं किए जा सकते हैं, जोत भी छोटी व बिखरी है वहाँ इन मोटे अनाजों का उत्पादन व इस पर आधारित कुटीर उद्योगों की स्थापना निश्चित रूप से ही कृषि को लाभकारी बनाने व किसानों की आजीविका को बढ़ाने व महिलाओं को रोजगार दिलाने की दिशा में महत्वपूर्ण साबित हो सकती है। आजकल ब्रिटानिया आदि कई बड़ी फर्मे एवं महत्वपूर्ण संस्थाएं भी मोटे अनाजों से बने तैयार खाद्य उत्पाद जैसे डोसा मिश्रण, बिस्कुट आदि का निर्माण कर रही हैं।

राज्य के दूरस्थ क्षेत्रों में स्थित कृषि विज्ञान केन्द्रों द्वारा मोटे अनाजों की उन्नत खेती के साथ–साथ उनके मूल्यवर्धित उत्पाद तैयार करने हेतु कृषक महिलाओं को जागरूक एवं प्रेरित कर उन्हें स्वरोजगार एवं आय का एक वैकल्पिक स्रोत दिलाया जा सकता है, जिससे कि दूरस्थ अंचलों में पौष्टिक खाद्य पदार्थों की उपलब्धता के साथ–साथ स्वरोजगार का भी सृजन हो सके।

(वाई0पी0एस0 डबास)

सम्पर्क सूत्र :– डा0 वाई0पी0एस0 डबास, निदेशक प्रसार शिक्षा, गोविन्द बल्लभ पन्त कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय
पन्तनगर–263 145, ऊधमसिंह नगर (उत्तराखण्ड), ☎ 05944–233336 (कार्यालय), 233664 (निवास), Email-dee_gbpuat@rediffmail.com

विश्वविद्यालय हेल्प लाइन दूरभाष सं0 05944–234810, किसान कॉल सेन्टर निःशुल्क दूरभाष सं0 1800–180–1551

दृश्य यात्रा

97वाँ अखिल भारतीय किसान मेला एवं कृषि उद्योग प्रदर्शनी की झलकियाँ

कृषि विज्ञान केन्द्रों द्वारा आयोजित प्रशिक्षण, प्रदर्शन एवं भ्रमण कार्यक्रमों की झलकियाँ

मुद्रक : कृषिविश्वविद्यालय मुद्रणालय, पन्तनगर